माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा प्रवीणता पर एक अध्ययन

Ku. Shakuntala

Assistant professor

MJ College Bhilai (C.G.)

सारांश

मनुष्यों में अपने विचारों का आदान प्रदान करने का एकमात्र माध्यम भाषा है। माध्यमिक स्तर पर भाषा के अधिगम हेतु बहुत संवेदी उपागम का उपयोग अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों की भाषा प्रवीणता पर एक अध्ययन किया गया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु हिंदी माध्यम से कक्षा सातवीं के 80 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। इन चयनित विद्यार्थियों को दो समूहों में विभाजित किया गया जिसमें 40 नियंत्रित समूह के विद्यार्थी एवं 40 प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थी शामिल थे। नियंत्रित समूह के चयनित विद्यार्थियों को पारंपरिक विधि द्वारा भाषा का शिक्षण दिया गया एवं प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों को विभिन्न बहु संवेदी उपागमों द्वारा भाषा शिक्षण दिया गया। दोनों ही समूह के विद्यार्थियों के प्राप्त पश्च परिणामों के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि नियंत्रित समूह एवं प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों के मानों में अंतर है। नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में भाषा शिक्षण के प्रति कम रुचि पाई गई वही प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में भाषा शिक्षण के प्रति अधिक रुचि पाया गया

प्रस्तावना

भाषा को सामान्यतः वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जाता है। भाषा व्यक्ति के विचारों की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे व्यक्तित्व के निर्माण, विकास, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी एक साधन है। भाषा के बिना मनुष्य अपूर्ण हैं, अतः प्रस्तुत शोधपत्र में हिंदी माध्यम के कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों की भाषा प्रवीणता पर एक अध्ययन किया गया।

बहुसंवेदी उपागम -

बहु संवेदी उपागम का अर्थ एक या एक से अधिक संवेदी अगों का उपयोग कर सीखने की तकनीकी है। मनुष्य में 5 प्रमुख ज्ञानेंद्रियां है। (देखना- आंखों से सुनना- कानों से स्पर्श से सूचना नाक से और स्वाद सेना जीम से) जैसे बालक किसी चित्र को देखकर उसमें सम्मिलित भाव को अपने शब्दों में बोलता है पड़ता है तथा सुनता है कभी कभी उसमें बाधा भी उत्पन्न होती है इसी कारण बालकों या छात्रों की इस समस्या को ध्यान में रखते हुए बहुसंवेदी उपागम का शिक्षण में उपयोग किया जाता है। बहुवेदी उपागम विद्यार्थियों में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को पहचान कर उसे दूर करने की सबसे सरल व उत्तम

प्रक्रिया है। बहुसंवेदी उपागम में विद्यार्थियों की कमजोरियों को दूर करने के लिए विभिन्न श्रव्य दृश्य सामग्री यों का प्रयोग किया जाता है जिससे विद्यार्थियों को सरलतम रूप से शिक्षा प्रदान की जा सके।

भाषायी प्रवीणता-

भाषा प्रवीणता इस बात की माप है कि किसी व्यक्ति ने किसी भाषा में कितनी अच्छी तरह महारत हासिल की है। भाषा प्रवीणता को ग्रहणशील और अभिव्यंजक भाषा कौशल, वाक्य रचना, शब्दावली, शब्दार्थ, और अन्य क्षेत्रों के संदर्भ में मापा जाता है जो भाषा क्षमताओं को प्रदर्शित करते हैं।

भाषा प्रवीणता में मुख्य रूप से दो तत्व शामिल होते हैं:

1. प्रवाह और 2. सटीकता

1. प्रवाह: भाषा अधिगम में प्रवाह अत्यंत महत्वपूर्ण है जो उचित एवं प्रभावी रूप से संवाद करने के लिए आवश्यक है। यह भाषा के बोले या लिखित गए रूप का उपयोग करने की क्षमता है। प्रवाह के लिए शब्दावली और व्याकरण के उचित ज्ञान की आवश्यकता होती है । भाषाप्रवाह से निम्नलिखित क्षेत्रों में निपुणता हासिल की जा सकती है:

पढ़ना: पुस्तकों को पढ़ने और समझने की क्षमता

लिखना: लिखित क्षमता

समझना: भाषा को समझने की क्षमता

बोलना : भाषा के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने की क्षमता

2. सटीकता: सटीकता से तात्पर्य है कि शिक्षार्थियों द्वारा भाषा प्रणाली के व्याकरण, उच्चारण और शब्दों का उपयोग आदि। अन्य प्रकार से कहा जाए तो सटीकता काल, क्रिया, संज्ञा एवं सर्वनाम के रूपों और बोलचाल की भाषा के उचित प्रयोग से है।

संबंधित शोध अध्ययन

जुबान (2011) ने अंग्रेजी भाषा कौशल सिखाने के लिए बहुसंवेदी उपागम का उपयोग करके पाया कि नियंत्रित समूह (जिन्हें बहु संवेदी उपागम के उपयोग के बिना शिक्षा दी गई) व प्रायोगिक समूह (जिन्हें बहुत संवेदी उपागम के उपयोग के साथ शिक्षा दी गई) के बीच पश्च परीक्षणों के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है। जोशी (2002) ने बहु संवेदी शिक्षण उपागम का प्रभाव देखने में प्रयोगात्मक समूह के अधिक अंक पाये। ओबेद (2013) ने कक्षा 6वीं के अक्षमता वाले विद्यार्थियों को बहुसवेदी उपागम से गणित पढ़ाया उन्होने प्रयोगात्मक समूह के परिणाम बेहतर पाये। गरिमैला एवं श्रीनिवासन (2014) ने भी अपने शोध में प्राप्त बहुसंवेदी तकनीकी से अंग्रेजी भाषा प्रवीणता आती है। अरंगासामी (2014) ने ई लर्निंग के उपयोग का प्रभाव छात्रों के अंग्रेजी भाषा दक्षता पर देखा। परिणाम से पता चलता है कि अंग्रेजी भाषा दक्षता में सुधार के लिए ई-लर्निंग का उपयोग आवश्यक है।अलहबाहबा et al.(2016) ने शब्दावली

शिक्षण में भूमिका निभाने की रणनीति की प्रभावशीलता पर अध्ययन किया एवं परिणाम स्वरूप यह कहा जा सकता है कि रोल प्ले के द्वारा शब्दावली सीखने में सहायता मिलती है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषायी प्रवीणता का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य

कक्षा सातवीं के नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की भाषा प्रवीणता के लिए पश्च परीक्षणों के प्राप्तांकों का अध्ययन करना।

परिकल्पना

कक्षा सातवीं के नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की भाषा प्रवीणता के लिए पश्च परीक्षणों के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध पत्र में नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों पर स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रशासन करने के उपरांत प्राप्त आंकड़ों पर टीमूल्य परीक्षण किया गया।

चर

प्रस्तुत शोध पत्र में स्वतंत्र चर के रूप में भाषाई प्रवीणता को लिया गया।

एवं परतंत्र चर के रूप में कक्षा सातवीं के छात्रों को लिया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध पत्र में न्यादर्श के रूप में दुर्ग नगर के इंग्लिश माध्यम के विद्यालयों में से रामनगर क्षेत्र के इंग्लिश विद्यालयों में से 80 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। इन विद्यार्थियों को पुनः दो समूहों में बांटा गया जिसमें 40 नियंत्रित समूह एवं 40 प्रयोगात्मक समूह थे। इन चुने हुए कुल 80 विद्यार्थियों पर स्वनिर्मित भाषा प्रवीणता के उपकरण को प्रशासित किया गया।

सारणी क्रमांक 01

न्यादर्श का विवरण

समूह		पूर्व परीक्षण	स्वतंत्र चर	पश्च परीक्षण
नियंत्रित समूह	छात्र	T1	बहु संवेदी वीडियो शिक्षण विधि	T5
	छात्राएं	T2	बहु संवेदी वीडियो शिक्षण विधि	T6
प्रयोगात्मक समूह	छात्र	T3	परंपरागत शिक्षण विधि	T7
	छात्राएं	T4	परंपरागत शिक्षण विधि	T8

उपकरण

सर्वप्रथम हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम की कक्षा सातवीं के हिन्दी पाठ्यक्रमको देखकर उसमें शामिल व्याकरण का अध्ययन और विश्लेषण किया। व्याकरण के अन्तगर्त वाक्य, समास, संज्ञा, सर्वनाम, मात्राओं पर्यायवाची, विलोम, मुहावरे का सेट का अध्ययन किया गया और इनमें संबंधित एक प्रश्नों को सेट तैयार किया गया। जिसमें बहुविकल्प 80 प्रश्न थे। इस प्रकार प्राथमिक परीक्षण तैयार हुआ। इसे पूर्व परीक्षण के लिए 9 विषय विशेषज्ञों को दिया गया। विषय विशेषज्ञों को परीक्षण का उद्देश्य बताते हुए उसके प्रश्नों से संबंधित सुझाव व सुधार संबंधित निवेदन किया गया। विशेषज्ञों के सुझाव के आधार पर परीक्षण में आवश्यक संशोधन करने के उपरांत इसका प्राथमिक ड्राफ्ट तैयार किया गया तत्पश्चात् इसका प्रिंट निकलवाया गया। इस परीक्षण की भाषा व कथनों की स्पष्टता तथा निर्देशों की स्पष्टता आदि के जांच के लिए इसे कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों के छोटे समूह पर प्रशासित किया गया। इससे प्राप्त सुझावों के आधार पर सुधार करके परीक्षा का प्रिंट निकाला गया परीक्षण का पद विश्लेषण करने के लिए इस प्रारूप को कक्षा सातवीं के 100 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। परीक्षण का फलांकन करने के पश्चात् पदविश्लेषण के लिए कैली (1939) ने अपनायी। सभी विद्यार्थी के परीक्षण के कुल प्राप्तांको के अनुसार उच्चतम से निम्नतम की ओर सुव्यवस्थित किया गया इसमें से उपर के 27 प्रतिशत तथा नीचे के 27 प्रतिशत विद्यार्थियों को उच्च व निम्न समूह में रखा गया। उच्च व निम्न समूह बनाने के पश्चात प्रत्येक पदों के लिए उच्च व निम्न समूह के सही उत्तरों की गणना कर ली गई। फिर कठिनाई स्तर तथा विभेदन क्षमता ज्ञात करने के लिए स्टेनले की पद विश्लेषण विधि अपनाई गई। इस आधार पर कुछ पद निरस्त हो गये तथा अंतिम प्रारूप का प्रिंट निकलवाकर आंकड़े एकत्रित किए गए। प्रत्येक पद का कठिनाई स्तर तथा विभेदन इन्डेक्स परिशिष्ट में दियागया है।

विश्वसनीयता

किसी परीक्षण की विश्वसनीयता उस परीक्षण के प्राप्तांकों के बीच संगतता की मात्रा है (मार्शल एवं हेल्स, 1972) । प्रस्तुत परीक्षण की विश्वसनीयता परीक्षण, पुनः परीक्षण विधि द्वारा ज्ञात की गई है। परीक्षण के अन्तर्गत प्रारूप को प्रशासित करने के पश्चात 15 दिन के अन्तराल पर पुनः उन्हीं विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। आन्तरिक संगतता विश्वसनीयता का आंकलन कॉनअल्फा गुणांक का मान .89 प्राप्त हुआ जो उच्च विश्वसनीयता दर्शाता है।

वैधता

प्रस्तुत उपकरण की वैधता विषय विशेषज्ञों के अवलोकन के द्वारा स्थापित हुई

प्रशासन

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार कक्षा सातवीं के कुल 80 छात्रों को यादृच्छिक न्यायाधीश विधि द्वारा चुनाव करने के पश्चात दो भागों में नियंत्रित समूह एवं प्रयोगात्मक समूह में बांटा गया। नियंत्रित समूह के छात्रों को पारंपरिक पद्धति अर्थात ब्लैक बोर्ड विधि द्वारा शिक्षण कराया गया एवं प्रयोगात्मक समूहों के छात्रों को बहु संवेदी पद्धति द्वारा अर्थात वीडियो टेप एवं PPT के माध्यम से शिक्षण कराया गया। यह शिक्षण कार्य 30 दिनों तक किया गया। दोनों ही समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के प्राप्त अंकों को स्व निर्मित उपकरण द्वारा एकत्रित किया गया।

परिकल्पना का सत्यापन

कक्षा सातवीं के नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की भाषा प्रवीणता के लिए पश्च परीक्षणों के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।

उपर्युक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु नियंत्रित समूह को व्याख्यान विधि से तथा प्रयोगात्मक समूह को बहुसंवेदी उपागम द्वारा पढ़ाया गया। दोनों उपागमों की प्रभावशीलता देखने हेतु ट्रीटमेंट के उपरांत नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह के पश्च परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांकों में टी परीक्षण का आकलन किया गया। इन आंकड़ों से प्राप्त परिणामों को सारणी में देखा जा सकता है।

सारिणी क्रमांक 02

नियंत्रित एवं प्रयोगिक समूह के विद्यार्थियों की भाषा प्रवीणता में पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
नियंत्रित समूह	40	31.02	2.92	10.08
प्रयोगिक समूह	40	36.97	4.44	
df = 78, P<0.01, सार्थक है				

उपर्युक्त सारिणी क्रमांक 02 से यह विदित होता है कि नियंत्रित समूह के भाषा प्रवीणता के पश्च परीक्षण के मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 31.02 एवं 2.92 प्राप्त हुये हैं। प्रयोगात्मक समूह के भाषा प्रवीणता के पश्च परीक्षण के मध्यमान व मानक विचलन 36.97 तथा 4.44 प्राप्त हुये हैं। इनके लिए टी का मान 10.08 प्राप्त हुआ है। सारिणी मान स्वतंत्रता के अंश 78 पर 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.59 है। चूँकि प्राप्त मान सारिणी के मान से अधिक प्राप्त हुआ है अतः यह प्राप्त मान सार्थक है। सारिणी क्रमांक 4.07 को देखने से यह भी स्पष्ट होता है कि प्रयोगिक समूह के लिए पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान नियंत्रित समूह के मध्यमान से अधिक है। इन आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि प्रयोगात्मक समूह जिन्हें बहुसंवेदी उपागम द्वारा शिक्षण प्रदान किया गया था उनका अधिगम बेहतर हुआ। इससे निष्कर्ष निकलता है कि बहुसंवेदी उपागम से अधिगम अच्छा होता है। जुबान (2011) ने अंग्रेजी भाषा कशक्षण में समान परिणाम प्राप्त किये। इसे निम्न आरेख में प्रदर्शित किया गया है ।

आरेख क्रमांक 01

आरेख -नियंत्रित एवं प्रयोगिक समूह के प्रवीणता में पश्च परीक्षण का मध्यमान

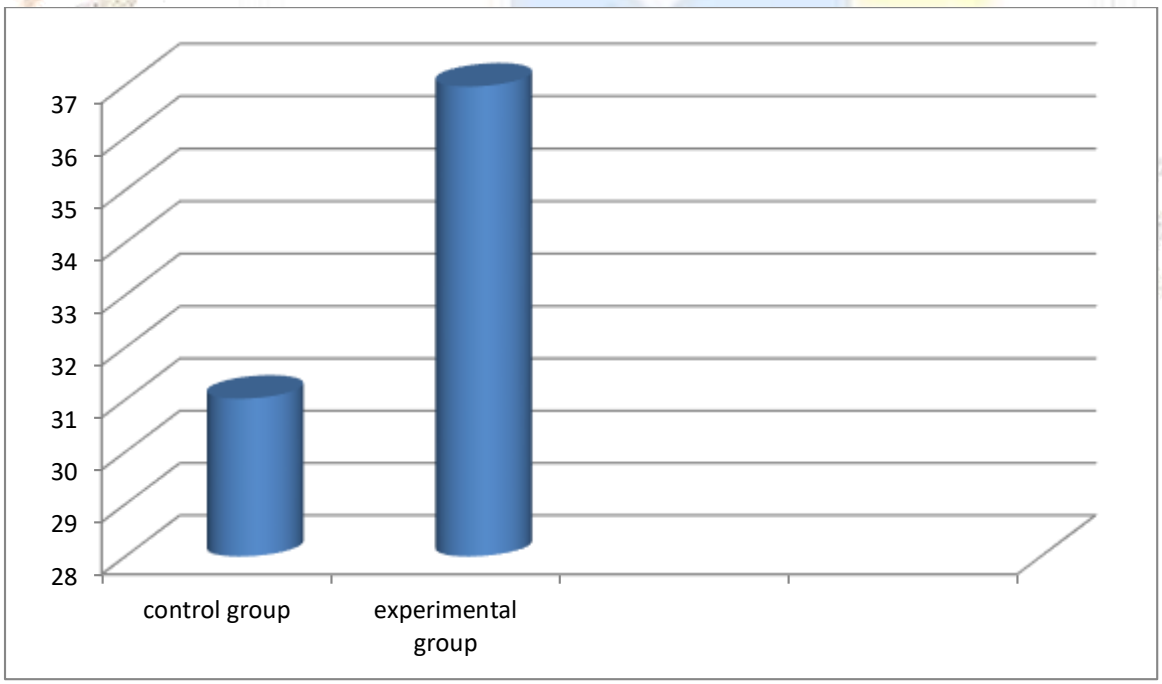

उपर्युक्त आरेख यह दर्शाता है कि प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान नियंत्रित समूह की अपेक्षा अधिक है। इसका कारण यह हो सकता है कि बहुसंवेदी उपागम व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुरूप शिक्षण प्रदान करलने में सक्षम है। प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी विभिन्नता के आधार पर विभिन्न कौशलों में शिक्षण प्रदान किया जा सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपत्र में कक्षा सातवीं के नियंत्रित व प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की भाषा प्रवीणता के लिए पश्च परीक्षणों के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि शोध के लिए निर्मित शून्य परिकल्पना निरस्त हुई। अर्थात यह कहा जा सकता है कि छात्रों की भाषाई प्रवीणता शिक्षण के माध्यम के अनुसार बदलती है। अतः प्रयोगात्मक समूह के छात्र जिनका बहु संवेदी उपागम की सहायता से शिक्षण किया गया था उनके एवं नियंत्रित समूह जिनका पारंपरिक पद्धतियों द्वारा शिक्षण किया गया था मैं सार्थक अंतर पाया गया। इसका मुख्य कारण यह है कि यदि छात्रों को बहुत संवेदी उपागम द्वारा शिक्षण दिया जाता है तो उनमें रुचि एवं उस ज्ञान को लंबे समय तक स्मरण रखने की शक्ति में वृद्धि होती है जबकि पारंपरिक पद्धति द्वारा किया गये शिक्षण कार्य में छात्र कम रुचि लेते हैं एवं प्रदान किए गए ज्ञान को लंबे समय तक स्मृति पटल पर बनाए रखने में असमर्थ होते हैं।

Reference:-

Obaid, M.A.S. (2013). The Impact of Using Multisensory Approach for Teaching Students with Learning Disabilities. Journal of International Education Research, 9(1), 75-82.

Garimella, S. & Srinivasan, V. (2014). A Large Scale Study of the Effectiveness of Multisensory Learning Technology for Learning English as a Second Language. English Helper.

Joshi, R., M., Dahlgren, M., & Boulware, R. . Teaching reading in an inner city school through a multisensory teaching approach. Annals of Dyslexia. Volume 52. 2002 Copyright 2002 The International Dyslexia Association ISSN 0736-9387

Jubran, S. (2011) Using a multisensory approach to teach English skills and its impact on student achievement in Jordanian schools. European Scientific Journal, vol. 8, pp. 22.

Ansarian, L., Adlipour, A.A., Saber, M.A. & Shafiei, E. (2016). The Impact of Problem Based Learning on Iranian EFL Learners Speaking Proficiency. Retrieved on March 2017 from http://dx.doi.org/10.7575/aiac.alls.v.7n.3p.84.

Alhababha, M. M., Pandian, A. & Mahfoodh, O. H. A. (2016). English Language Education in Jordan: Some Recent Tends and Challenges. P.Cogent Education, 3 (1), article 1156809.

Edward. Hancock (2023) hancock@answers-life.com.